Power of Knowledge *Volume : I* *Issue :V* *Oct.-Dec. 2013* *ISSN 2320- 4494*

संत साहित्य और जीवन मूल्य (संत कबीर के विशेष संदर्भ में)

डॉ.मंजूर सैय्यद
हिंदी विभाग प्रमुख एवं शोधनिर्देशक
म.वि.प्र. संचालित कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, ओझर मिग,

भक्तिकाल भक्ति की प्रतिध्वनियाँ एवं मानव मूल्यों से अभिसिंछित है | जब विदेशीयों द्वारा मूल्य निष्ठा को नष्ट-भ्रष्ट तथा उध्वस्त करने के भरसक अनान्य प्रयास हो रहें थे, तब संत साहित्य द्वारा सामाजिक, राष्ट्रीय, धार्मिक क्षेत्रो में मानवतावादी आदर्शो द्वारा मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा की जा रही थी, किंतू आदर्शो की प्रतिष्ठा हेतु सब से पहले मानवी मूल्यों की प्रतिष्ठा आवश्यक होती है | इसीलिए संतो में आदर्श, न्याय, समानता तथा मानव मूल्यों की स्थापना हेतु आचरन की सात्विकता को बड़े पैमाने पर प्रतिष्ठीत किया है | अतः भक्तिकाल मानव मूल्यों का अमर काव्य होकर, उसमें मानवी जीवन के अनेकानेक आदर्शात्मक सत्य की अभिव्यक्ति हुई है, इसीलिए "संतो, भक्तों की भक्तिरस में पगी वाणि भारतीय वाडमय का अपने देश काल का सांस्कृतिक व्याख्यान है |"[१]

जीवन मूल्य - 'मूल्य' शब्द वास्तविक अर्थ शास्त्र से साहित्य में आयातित हुआ है, अंग्रेजी 'value' शब्द का पर्यायी है | जिसका अर्थ, महत्व है , जो जिवन को संवर्धित एवं परिमार्जित करते है, वे व्यक्ति एवं समाज को व्यवहार को निर्देशित करते है, वे मूल्य होते है | सामान्यतः मानव समाज द्वारा निर्धारित नियम एवं आदर्श परिष्कृत तथा श्रेष्ट जीवन पध्दति प्रथान करनेवाली उस संकल्पनाको मूल्य कहा जा सकता है, वह परिवर्तन, प्रगति के वाहक है, मानव जीवन, समाज एवं समय के परिवर्तन के साथ मानवीय मूल्यों में भी परिवर्तन होता है | इस प्रगती के दौर में कुच मूल्य समय के अनूसार नविनता और आकार ग्रहण करते है, तो कुछ मूल्य समय एवं समाज में आकार न ग्रहन करने के कारण अर्ध या पूर्ण रुपेन नष्ट भी होते है | मानवीय मूल्य भी समाजयानुरुप परिवर्तित होते, वास्तविक संत साहित्य का मानव मूल्य व्यापक पक्ष है, लोककल्याण, मानवता, मानव कल्याण, पारस्परिक सद्भाव एवं सम्नवय, दया, प्रेम, सत्य, परोपकार आदि है| संतो ने इन आदर्शो को प्रत्यक्ष मानव कल्याण हेतु समाज में महत्व दिया है |

संत काव्य एवं जीवन मूल्यों के अध्ययन हेतु संत, संत परम्परा, संत साहित्य का स्वरुप, उसके महत्व का अध्ययन अनिवार्य हो जाता है, "संत शब्द सत्य"[2] का पर्यायवादी है | राहूल सांकृत्यायनजी ने "संत, ऋषी, मुनि, संत्पुरुष, सिध्द् संतो को एक तरह की व्यक्ति बताया है|"[३] तुलसीदासजी ने संतो के "आचारण को चंदन की भॉति बताया है |"[४] अतः विभिन्न विद्वानों ने लोक मंगल एवं ब्रह्म में लीन रहनेवाले, असत्य एवं विकारों से दूर-दूर का रिश्ता न रखनेवाले को संत बताया है| संत काव्य एवं मानव मूल्यों के अध्ययन में निर्गुण संत परम्परा का अध्ययन अत्यावश्यक है |

निर्गुण संत परम्परा - आ.रामछांद्र शुक्ल का मन्तव्य है की, 'निर्गुण मार्ग के निर्दिष्ठ प्रवर्तक कबीरदास ही थें', लेकिन कबीर के पूर्व रैदास, जयदेव, नामदेव, सदना, लालदेव, वेणी, त्रिलोचण आदि निर्गुण संत है | अंतः विद्वानो में निर्गुण संतो की परम्परा को लेकर विभिन्न प्रकार के विवाद स्पष्ट रहें है, निर्गुण संत मत के विचारों को स्पष्ट शब्दो में कबीर ने व्यक्त किया है | "कबीर को निर्गुण काव्य का प्रवर्तक कहने की परम्परा अभितक चली आ रही है |"[५] कबीर के पूर्ववर्ति जयदेव, सदना, वेणी, त्रिलोचान, नामदेव, स्वामि रामानंद, सेननाई, (१४५०) पीपाजी, (१४२५) रैदासजी, कमाल, धंन्नाभगत, (१४७२) जंभनाथ, (१५०८) गुरुनानक, (१५२६) शेख फरीद, गुरु आनंद, (१५५१) गुरु अमरदास, सिंगाजी, भिषणजी, गुरु रामथस, धर्मदास, दादू दयाल, गुरु अर्जन देव संवत (१६२०), बावरी साहिबा, गुरु गोविंदसिंग, मलुकदास, गरीबदास, (१६३२) सुंदरथस (चेटा), (१६५३) हरीथस निरंजनी, गुरु तेग, (१६७०) बाबा धरणीदास, (१७१३) गरीबदासजी, (१७१४) यारी साहब, (१७२५) जग जीवन साहब, (१७२७), दर्या साहब (बिहारवाले), (१७३१) दर्या साहब (मारवाडवाले), बुल्ले शाह, गुलाब साहब, (१७५०), बाबा किनारा, चरणदास, (१७६०) पलटू, भिकादास, दयाबाई,

(१७५०) सहजोबाई, शिवनारायण, (१८००) रामरहसदास (संदर्भ -संत काव्य में समभाव - राजेंद्र)

संत काव्य में जीवनमूल्य - (कबीर के विशेष संदर्भ में) - मानव जीवन में जो मूल्य आदर्श का रुप ग्रहण करते है, जो वास्तिवक जीवन के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनते हुएं, उत्कृष्ट उपलब्धियों का सृजन करते है | इसके अंतर्गत विशेष बृहत मानव जीवन का अभ्युदय करनेवाले विशेष गुण होते है, हिंदी साहित्य का भक्तिकाल मानव जीवन एव मनव मूल्य की समृध्दि का सुवर्णकाल भी है, जिस में जीवन के अन्यान्य आदर्श एवं मूल्य व्यापकत: विकसनशिल है, जिनका परवर्तित साहित्यकार तथा साहित्य पर प्रभाव परिलक्षित होकर, वह आधुनिक भारतिय समाज, साहित्य की सांस्कृतिक धरोहर है| मध्यकाल की निर्गुण मार्ग शाखा एवं कबीर का काव्य इस दृष्टि से प्रमुख है | उनका संपुर्ण लेखन रहस्यवादी, क्रांतिकारी होते हुए भी, मानवतावादी आदर्श तथा मानविय मूल्यों से अभिसिंचीत है | तत्कालिन सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने मानवतावादी आदर्शो की प्रतिष्ठा की है, परंतू इन आदर्शो की प्रतिष्ठा के लिए सब से पहले मानवीय आदर्शो की प्रतिष्ठा आवश्यक होती है, कबीर का युग संघर्षमय था, ऐसे सघर्ष एवं धर्मान्धता के समय में उन्होने 'ऑखो देखी, कथनी और करनी' द्वारा आदर्श स्थापित किया, इसीलिए उन्होंने आचारण की सात्विकता को व्यापक मात्रा में मानव मूल्यों द्वारा प्रतिष्ठित किया है | अत: कबीर का काव्य,मानव मूल्यों की अनुभूति की सघगनता, गहनता, परिपूर्णता से युक्त गौरव का काव्य है, जिसकी आत्मा या जीवन रस मानव मूल्य है |

यद्दपि प्राचीन भारत में मूल्य का स्वतंत्र विवेचन उपलब्ध नही होता, किंतु जीवन की पूरी मूल्य व्यवस्था पर सर्वांगदृष्टि से विवेचन भारतिय मनिषियों ने अत्यंत प्राचिनकाल में किया था "भारतीय जीवन में जो चार पुरुषार्थ माने गये है, उन्हेही मानव मूल्य कहा जा सकता है|"[६] समाज, राष्ट्र धर्म के द्वारा बताए गये नियमों का पालन परम्परागत रुप से किया जाता है, जिन में दया, नैतिकता, त्याग, परोपकार, सत्य, अहिंसा, आदि मानव के आदर्श पक्ष से संम्बधित है | इन शब्दों का संबध मानविय व्यवहार तथा आदर्श व्यक्तित्व से होने के कारण इन्हे मानविय मूल्यों के पर्याय माना जाता है | डॉ.शाहिना ने अपने शोध में इस संदर्भ में विवेचन किया है की, "ईश्वर की सर्व व्यापकता, सत्य का महत्व, दान का महत्व, उच्चता का महत्व, नारी की महत्ता|"[७], डॉ.हनुमंतराव पाटीलजी ने 'भक्तिकालिन काव्य में मानव मूल्य' ग्रंथ में सत्य, अहिंसा, प्रेम, दान, आदर्श, समन्वय वादिता, मानवतावाद आदि को मानव मूल्य के रुप में व्यक्त किया है| डॉ.नीरेंद्र मोहन के नूसार "कबीर के अनुसार प्रेम, विश्वास, सत्यशीलता, क्षमा, मनुष्य की सेवा और सद्भावनाही मानवमूल्य है", जो भारतिय लोक जीवन में श्रेष्ठता और उच्चता के प्रतिक है, मानव मूल्यों का संबध व्यक्ति के जीवन के उथत्त तत्वों से है, जिन के व्यवहार में उच्चातर जीवन की दिशाएँ प्रशस्त होती है, इन में सत्य की प्रतिष्ठा, अहिंसा, त्याग, परोपकार, दया, प्रेम की प्रतिष्ठा, तथा मानव के साथ प्राणियों के प्रति दया, ममता सम्मिलित है | कबीर काव्य के अध्ययन के उपरोक्त मूल्यों एवं आदर्शो, तत्वों के आधार पर कबीर के काव्य में मानवीय मूल्यों का अध्ययन किया जाएगा जो मानविय मूल्यों से ओतप्रोद है | कबीर के पूर्व भी नाथो साहित्य में आदर्श मानव मूल्यों पर प्रकाश डाला गया है |

I : दान एवं संतोषी वृत्ती - भारतभूमि के जनजीवन में दान को श्रेष्ठ बतलाया गया है, जायसी के नुसार "संसार में उसी का जीवन और प्राण धन्य है" दान का दिपक निरंतर प्रकाशमान होता है | जो बढा दानी है, प्रेमचंद के नुसार दान, जप, तप से भी महान है, अर्थात कबीर ने दया, दान, संतोषी वृत्ती की प्रतिष्ठा की है, उनके साहित्य में भूखे, पतित एवं शोषित वर्ग के प्रति साहनुभूति का अजस्त्र स्त्रोत प्रवाहित होता, परिलक्षित है | उन्होंने भूके को भोजन का दान देने की बात कही है | कबीर ज्ञान से दूरद्रष्टा तथा समकालिन व्यवस्था के पूर्ण ज्ञानी थे | इसीलिए उन्होंने कहा की, भूके प्राणियों, व्यक्तियों को अन्न, या भोजन का दान देना चाहिए, क्योंकि जीवन एवं जीवन साधना की दृष्टि से पेट भर भोजन की आवश्यकता होती है | "भूखे भगति न किजिए |"[८] लेकिन अन्न, भोजन का दान देते समय उतना ही देना चाहिए, जितना उसे आवश्यक है, दान देते समय उसे भूखे दुर्बल को सताना चाहिए नही, - तब कही उसे भोजन आनंद मिलेगा एवं दान का पुण्य भी दानी को मिलेगा |

"साई इतना दिजिए जामे कुटूंब समाय,
मैं भी भूखा न रहूँ, साधू न भूखा जाएँ"

ii : सत्य - भारतीय जनजीवन में सत्य की प्रतिष्ठा एवं महत्ता अनादि कालखंड से स्विकार्य है, प्रेमचांदने सत्य की प्रतिष्ठा व्यक्त करते हुए, 'जागरण' साप्ताहिक में कहॉ था

की, 'सत्य' एवं 'न्याय' पर मरना ही हमारे जीवन का मुख्य उद्देश है, 'जो सत्य का वह सत्यवादी होगा', अर्थात साहित्यकार के जीवन का उद्देश सत्य की प्रतिष्ठा एवं अभिव्यक्ति ही हैं | कबीर ने युक्त विचारों को प्रतिष्ठीत करने का प्रयत्न किया है | समकालिन विभिन्न धर्मो, समाज को स्पष्ट शब्दो में सत्य सुनाया की , 'ब्रम्ह' एक और 'सत्य' है, संसार को चलानेवाली सत्ता हमें अनेक रुपों में दृष्टिगत है, लेकिन सत्य वास्तव यही है की, वह एकही है, राम, रहिम, करीम, अल्लाह, खुदा, गोरख अन्यान्य नामों के आधार पर उसे व्यक्ति विशेष रुप में नही देखा जाता| "उनका ब्रम्ह सत्य वही जो सनातन तत्व है, खुदा वह है, जो दस दरवाजों को खोल देता है, रब वह है, जो चौरासीलाख योनियों का प्रखर दिगार है, करीम है, जो इतना सबकुछ कर रहा है, गोरख वह है, जो ज्ञान से गम्य है, और महादेव वह है, जो मन को जगाता है, इसके नाम अनंत है और स्वरुप अपरंम्पार है |"[९]

iii : मानव प्रेम - संत कबीर का समसामयिक समय सामाजिक विखंडन एवं धार्मिक विघटन का था, ऐसे परिवेश में कबीर ने मानव प्रेम का महत्व प्रस्तुत किया वह निसंदेह अविस्मरणिय है, कबीर ने अपनी रचानाओं में मानव प्रेम के उदात्त भाव को स्थान दिया है | सभी धर्मो का सामान्य तत्व मानव प्रेम है| इसी के माध्यम से द्वेषपूर्ण भेदभाव एवं अन्तर को नष्ट किया जा सकता है, कबीर ऐसे सत्य मानव प्रेम के संरक्षक है, उनके अनुसार आत्मज्ञान से पूर्ण इन्सान ही सच्चा इन्सान है, कबीरदास यह मानव प्रेम और सच्चि मानवता की भावना को वृध्दिगत करते है, और सामाजिक भेदभाव, छुआछूँत, धार्मिक पाखंड, बाह्याडंम्बर का विरोध करते है, और मानव के मध्य उच्च उदात्त भावना का संचार करते है, जिस में किसी भी तरह के भेदभाव को कोई स्थान नही रह जाता है |

vi : अहिंसा - कबीर का समय विभिन्न, धार्मिक प्रथाओं तथा तंत्र मंत्र जादू, टोना, ओझावों, मुल्लाओं, पंडितों का था, व्यापक मात्रा में समाज में स्वार्थ सिंध्दी हेतु अनेक त्यागजन्य कर्मो कों प्रश्रय था, जिस में विभिन्न प्रकार के पशु पंच्छियों की बलि, निर्गुण हत्या नित्यक्रम से की जाती थी, ऐसे हिंसा और हत्या का सभी संतो ने पुरजोर निषेध किया है, और प्राणि पच्छियों के प्रति दया का भाव रखने की भावना का आदेश दिया है | कबीर के नुसार वही व्यक्ति संत कहलाने का अधिकारी है, जो प्रत्येक जीव के प्रति दयालू हो | कबीर ने पशू हत्या का कठोर विरोध करते हुए अहिंसा का महत्व प्रस्तुत किया की, "बकरी, मुर्गा, किन कुरमायों, जिसके हुकूम तूम, छुरी चलायों, दरदन जानत, पिर कहावत, बैठे पढी पढी जग समझावत |"

v : समदृष्टि - सामाजिक जीवन के लिए आवश्यक होकर वह पारस्परिक द्वेषभाव का नाश कर निर्मल दृष्टि का निर्माण करती है | समदृष्टि की भावना का विकास तब संभव है, जब मनुष्य में उदारता हो, अपने-पराये का भेदभाव रखनेवाले व्यक्ति के लिए यह संभव नही है | इसी दृष्टि से संपूर्ण संसार एक समान दिखाई देने लगेगा और यही भावना 'उथर चरिताना तु वसुधैव कुटुम्बकम' कहलाती है| कबीर ने समदृष्टि का परिचाय देते हुए कहा है की, "उँचा नीच्चा सम सरिया, तादौ जन कबीर निसतरीया |"[१०]

vi: श्रम का सम्मान - डॉ.मोतिसिंह ने निर्गुनिया भक्ति साहित्य को किसानो और कामगारों का ही सशक्त आंदोलन माना है, भक्तिकाल के जितने भी निर्गुण संत कवी थे, वे कृषक, श्रमिक वर्ग से थे | कबीर स्वयं जुलाहे थे | धन्ना राजस्थान के जाट खेतिहर थे | रज्जब मुस्लिम दर्जी थे, रविथस चर्मकार थे | आर्थिक रुप से सामंती एंव आर्थिक स्वावलंबी समाज में अपने लिए सामाजिक न्याय की मांग वे साहित्य द्वारा करते थे | कबीर ने विचारों का पालन करते हुएं श्रम को प्रतिष्ठा दि है |

vii: लोकमंगल की भावना - कबीर मानवतावादी हो, 'सर्व भवंतु सुखिनः सर्व संतु निरामल' के पक्षधर है, उनका व्यक्तित्व समन्वयवादीता एकत्व की भावनाओं से ओतप्रोद था | उनके सामाजिक सद्भाव पर विहंगम दृष्टि डालते है तो, समकालिन व्यवस्था में समाज दु:ख, बिखराव, नीरिह निम्न वर्ग पर राजाओं उँच्चा वर्गियों के द्वारा अत्याचार और वेदनाओं का क्रन्दन ही दृष्टिगत है | वे समाज के पारस्परित सद्भाव समन्वय के लिए ही काव्य में चिंतन करते है, तो मानवियता के मार्ग में बाधक हिंसा साम्प्रदायिकता, इर्षा, द्वेष, भेदभाव, उचानिचा आदि मूल्यहीन तत्वो, भावों कृत्यों का निषेध करते है | ऐसे लोकमंगलकारी चित्रण हेतु किसी एक भाषा में रचाना न करते हुएँ सभी धर्म एवं समाज के विभिन्न बोली भाषा के शब्दो से मिश्रित खिचड़ी या संधुक्कडी भाषा का प्रयोग करते हुए उसे लोकमंगलकारी जी कहते है | 'सम, सब कही हित होई' (तुलसीदास) लोकमंगलकारी भावना से प्रेरीत भाषा को उन्हों ने अपनाया है, जो सभी को ज्ञात एवं समझ सके |

viii : मानवतावाद- भक्तिकालिन संत की सबसे बृहत एवं महत्वपूर्ण उपलब्धि मानवतावाद है, उनके काव्य का अध्ययन करने के बाद स्पष्ट होता है की, सातसों साल के पूर्व भी कबीर की मानवतावादी विचारों के प्रति प्रबल आस्था थी, अतः उन्होंने मानवता के लिए निडरता से कहाँ की -

"पाथर पूजे हरि मिले, तो में पूँजू पहाड
मुल्ला बाँग दे रहा, क्या बहरा हुआ खुदाय |"[११]

इन्ही कारणों से "कबीर मानवतावादी जनवादी कवि है | उनका काव्य लोकजीवन से जुडा है, हम लोग जीवन के यथार्थ, लोक के कष्ट, पिडा या दुःख दर्द, हर्ष उल्लास, अभिव्यक्ति में सच्चे मानविय साहित्य की पहछान मानते है , और भक्तिकाल हमे बानगी देता है |"[१२]

x : समन्वयवादिता - कबीर के मानवी मूल्यों की अन्य एक उपलब्धि है समन्वय | ईश्वर, भक्ति, संस्कृति, धर्म, समाज आदि में समन्वयवादिता निर्माण करने हेतु कबीर के पदों की भूमिका विशेष रही है | धार्मिक एकता हेतु धर्म में ऐक्य निर्माण करते हुए मानतावादी विचारों को काव्य द्वारा प्रदर्षित किया, जैसे "कहे कबीरादास फकीरा अपनी राह चले |

हिंदू तुरक का करता एकै, ता गति लखी न जाई |"[१३]

निष्कर्ष - अतः स्पष्ट है की, कबीर ने अपने काव्य में जीवन मूल्यों, तथा आदर्शो की प्रतिष्ठा की उन्होंने एक पक्ष में जहाँ जीवन मूल्यों से सबंधित व्यक्ति के चरित्र के उथत्तता का महत्व अभिसिंचित किया है , तो दूसरी ओर समाज के दिन दलितो, शोषितों, वंचितों के प्रति निरंतर सहानुभूति प्रदर्षित की है , जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा में उन्होंने उस पृष्ठभूमि एवं कारणों का शोध भी किया, कबीर के काव्य में मानव मूल्य में समय एवं समाज के अनेक जटिल प्रश्नों की पहचान के संकेत है, जिसके कारण समकालिन सामाजिक जीवन में विषमता का विस्तार होकर दृढता निर्माण हुई थी, उन्होंने जो जीवन मूल्य निर्धात किए थे वह आधुनिक समाज, समय के अनुकूल सार्थक तथा प्रासंगिक मानव कल्याणकारी मार्ग के लिए है | कबीर साहित्य की उपादेयता एवं प्रदेय इन्ही मानविय आदर्शो, मूल्यों की स्थापना में है , वे जानते थे की उदात्त मूल्यों के आभाव में व्यक्ति किसी भी उर्ध्वगामी उद्देश के लिए प्रेरीत नही होता | अतः भक्तिकाल के संत साहित्य और मानव मूल्य के संदर्भ में कबीरदास का सूर तुलसी आदि महान संतो के कर्तुत्व तथा कर्म की बराबरी कबीर का कर्तुत्व करता है | किन्तू इन सभी संतो के भक्ति के प्रवाह भिन्न होते हुए ब्रम्ह एक है, कबीर ने मानव मूल्यों के माध्यम से जो आदर्श संदेश दिया है, वह समस्त भारतीय जीवन के लिए है, इन मूल्यों से आपसी भाईचारा, लोकमंगल, उचित-अनुचित ज्ञान होता है की, है विश्वचि माझे घर का बोध होता है |

संदर्भ -

१) डॉ.विमल मेहता - निर्गुण कवीयों के सामाजिक आदर्श - पृ.१२
२) हिंदी, अंग्रजी, गुजराती त्रि भाषाकोष- भाग ३, पृ.१८६
३) डॉ.मिथिलेश शरण मित्तल, निर्गुण संप्रोथयों के कवियों की मधुराभक्ति, पृ.२०५
४) डॉ.देवराज - भारतिय संस्कृति, पृ.२७
५) डॉ.श्यामसुंदरदास, कबीर ग्रंथावली, पृ.८२
६) गिरीराज शरण अग्रवाल, शोध दिशा, पृ.३०९
७) माताप्रसाद गुप्त, कबीर ग्रंथावली, पद- ८/५,
८) वही
९) डॉ.नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ.१३२
१०) शिवकुमार मिश्र, भक्तिकाल ओर लोकजीवन, पृ.२८
११) शिवकुमार शर्मा, हिंदी साहित्य की युग और प्रवृत्तियाँ, पृ.२०५
१२) शिवकुमार मिश्र, भक्तिकाल और लोकजीवन, पृ.८
१३) श्यामसुंदरदास, कबीर ग्रंथावली, पृ.८३

❑ ❑ ❑